www.dsvv.ac.in

देव संस्कृति विश्वविद्यालय
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA

Gayatrikunj - Shantikunj, Haridwar -249411 (India)
email: info@dsvv.ac.in • **web:** www.dsvv.ac.in

Criteria 7

7.1.10 –

Handbooks, manuals and brochures on human values and professional ethics

साधक दैनंदिनी का प्रारूप

दिनांक----------से ----------तक साधक का नाम---------

ग्रहण करने के नियम (नियम भरने के लिए)

तारीख	वार	सर्वत्र भगवत् दृष्टि	ईश्वर स्मरण सद्गुरु स्मरण	सूर्योदय पूर्व जागरण	प्रातः स्मरण और प्रणाम	नियमित गायत्री साधना	गीता एवं युग साहित्य का अध्ययन	निष्काम सेवा व स्वाध्याय	आत्मबोध तत्त्वबोध	कर्तव्य पालन	स्वच्छता सु-व्यवस्था	नियमित ध्यान	नियम पालन निरीक्षण

दिनांक----------से ----------तक साधक का नाम---------

त्याग करने के नियम (नियम भरने के लिए)

तारीख	वार	दूसरे के अहित का त्याग	असत्य भावना का त्याग	दूषित दृष्टि का त्याग	परिग्रह का त्याग	क्रोध का त्याग	फैशन का त्याग	अश्लील विनोद का त्याग	ईर्ष्या-द्वेष का त्याग	परनिंदा का त्याग	मादक वस्तु व व्यसन का त्याग	अभक्ष्य खान-पान का त्याग	समय नष्ट करने की प्रवृत्ति का त्याग

Baldau Dewangan
Digitally signed by Baldau Dewangan
Date: 2024.10.10 23:14:17 +05'30'

हमारे संगठन का युगऋषि-निर्देशित प्रारूप

* युग निर्माण अभियान-सृजन साधना का त्रिवेणी संगम है।
* योजना एवं शक्ति परमात्म सत्ता की।
* संरक्षण एवं मार्गदर्शन ऋषिसत्ता का।
* पुरुषार्थ एवं सहकार युगसाधकों का।

युग निर्माण अब किसी वर्ग विशेष अथवा क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं रह सकता। पुरुषार्थ की तीनों धाराओं (प्रचारात्मक, सृजनात्मक, संघर्षात्मक) के लक्ष्य व्यापक रहें।

प्रचारात्मक—नवसृजन का संदेश क्षेत्र के १०० प्रतिशत व्यक्तियों तक पहुँचे। उन्हें इसमें साझेदारी के लिए सहमत करने का नैष्ठिक प्रयास हो।

सृजनात्मक—जो जितने अंशों में सहमत हों, उन्हें उसके अनुरूप साधना, स्वाध्याय, संयम एवं सेवा कार्यों में लगने के लिए प्रेरित-प्रशिक्षित किया जाय। बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक क्रान्ति के जरिए व्यक्ति, परिवार एवं समाज निर्माण में प्रवृत्त कराया जाय। उसके लिए समयदान, अंशदान का नैष्ठिक क्रम बने। स्नेह, सम्मान एवं सहयोग देकर आगे बढ़ाया जाय।

संघर्षात्मक—युग सृजन के मार्ग में आने वाली आन्तरिक और बाहरी रुकावटों को विवेक एवं जुझारू साहस के साथ पार करने की व्यूह रचना बनाई-चलाई जाय।

उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए साधना, संगठन, सशक्तीकरण के सुनिश्चित लक्ष्य रखें।

साधना इतनी समर्थ बने कि व्यक्तित्त्व परिष्कार और विकास कठिन न लगे।

संगठन इतना समर्थ बने कि अपने क्षेत्र में युग सृजन की जिम्मेदारियाँ उठाना भारी न लगे।

* व्यक्तित्त्व बने प्रखर-परिष्कृत।
* संगठन बने सबल-व्यवस्थित।
* कार्यशैली में लाएँ सुधार-निखार।
* केन्द्र एवं क्षेत्र के संयोग से बने सृजनशील संगठित इकाइयों का सुसंबद्ध विकेन्द्रित तंत्र।

महान् अभियान के महान् दायित्व

परम पूज्य गुरुदेव ने इस तथ्य की ओर बार-बार ध्यान दिलाया है कि यह समय युग परिवर्तन की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। संत सूरदास, फ्रांसीसी भविष्यवक्ता नेस्ट्रॉडमस आदि से लेकर महात्मा बहाउल्ला, स्वामी विवेकानंद, योगी श्री अरविन्द आदि ने जिस महान् युग के आने के सुनिश्चित संकेत दिए हैं, उसकी अति महत्त्वपूर्ण अवधि यही है। जब भी ऐसे समय आते हैं, तब परमात्मसत्ता उपयुक्त माध्यमों के सहयोग से अद्भुत परिवर्त्तनों की व्यवस्था बनाती है। इस प्रकार की व्यवस्था जुटाने-बनाने में ऋषितंत्र की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण रही है।

पूज्य गुरुदेव ऋषि चेतना के युगीन प्रतिनिधि के रूप में अवतरित और सक्रिय हुए। उन्होंने देखा कि सारी विसंगतियों के पीछे मनुष्य की अनास्था और दुर्बुद्धि है, जो उससे दुष्कर्म करा रही है और सांस्कृतिक आदर्शों के विपरीत अपसंस्कृति का वातावरण बना रही है। उपचार के रूप में उनके माध्यम से सद्बुद्धि और सत्कर्म की साधना जनसुलभ बनकर देवसंस्कृति के उन्नयन और विकास का संकल्प उभरा। उन्होंने स्वयं कठोर साधना की तथा बड़ी संख्या में युगसाधक तैयार करके, हिमालय के ध्रुव केन्द्र से प्रवाहित विचार प्रवाह और शक्ति प्रवाह को जनसुलभ बनाया और उस आधार पर सृजन आन्दोलन चलाया।

आंदोलन का लक्ष्य मानव समाज को स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज की महान् उपलब्धियाँ प्रदान करना है। यह तीन विभूतियाँ भावनात्मक नव निर्माण के द्वारा ही संभव होंगी। आत्म निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण की तीन साधनायें पूरी करने से ही उपरोक्त तीन वरदान मानव जाति प्राप्त करेंगी, जिससे चिरस्थायी सुख-शांति का आनंद एवं संतोष-लाभ प्राप्त किया जा सकेगा। धरती पर स्वर्ग का अवतरण इन्हीं भागीरथ प्रयत्नों द्वारा संभव होगा। अपने परिवार के छोटे से संगठन से इस परम पुनीत अभियान का शुभारंभ किया गया था। बीज तब छोटे रूप में बोया गया था, पर आगे चलकर यह विशाल वट-वृक्ष के रूप में परिणत हो गया है। इसमें कोई शक नहीं कि इन दिनों विनाशकारी असुरता बहुत जोर दिखा रही है। फिर भी अंतरिक्ष में ऐसे दिव्य प्रवाह उमड़े हैं, जो इस सुन्दर विश्व की गरिमा को जीवित रखने के लिए गतिशील हैं। ध्वंस की चुनौती सृजन ने स्वीकार की है और असुरता को सर्वभक्षी-सर्वनाशी न होने देने के लिए देवत्व ने प्रतिरोध का साज सजाया है। अपने मिशन का संगठनात्मक ढाँचा इन्हीं दिव्य प्रयत्नों की एक झाँकी ''युग